तृतीय बध्याय

प्रशांत के माननेतर जनम प्रकृति-संबंधी चित्र

प्रकृति का धीर-धीर निरीक्षण करते-करते उसी परिश्रम में वहनिश्चित निरर्दर करते तारे प्राणियाँ की ओर ध्यान जाता स्थायीत्व ही है। यही कारण है कि क्षायावादी कवियों ने अपने काव्य में पशु-पक्षियों का को चित्रण किया है। पशु पक्षी की बप्पत के निक नींद में बाराथ जैसे लोग जंगल में सजीव बने बंगडाई चेते जलस मुनाफ़ा विलुप्त लेकर ओर बुझत बाह्य मधुरता के नाच करते गुन्दर बाल-विलासी की ओर कवि बिच अर्थात बाह्य हुआ है। कुछ-कुछ से बोलते हुए कालू का माना बहर में ले जा दिले हैं।

पंक्ति-वाक्य के चित्र

पक्षियों में प्रशांत ने कौटिल के प्रति वालकीक तारागत्व अनुभव किया है। इसे "वर्ष-का दूसरे स्वीकार करते हुए उसी के साथ उसका संबंध कीड़ा है --

मधुरता वर्ष-का ही जीवन वन के --

क्या तुम्हें देखकर बाते वो मातवाली कौटि बोलो थीं।

1. कानन-कुहूं, पृष्ठ ४६।
2. लहर ल., पृष्ठ ४५।
3. कामायनी, पृष्ठ ६६।
4. लहर, पृष्ठ १६।
5. लहर, पृष्ठ ३३।
6. कामायनी, पृष्ठ ४३।
फिक सा स्वर प्रशाद को बत्वातः मिला है। तवी उन्हाँने लिखा है —

"वाक्यों के बन-बैठके में जिल्ला पंचम स्वर फिक-सा है।" १

यही कौफित यौवन के पी बल्लातः निकट है। उज्जवल चित्र भी देखिये —

"बाजर इस यौवन के माकों कुंज में कौफित बोल रहा।" २

बाम के बौर भी वर्षा भी ही लिखते हैं बता: कौफित का संवेष इस वृत्त से भी बोल

"हिली बाम की हाल, का ज्या नव रिहायला

"बाध कौन है या पंचम स्वर में कौफित बोला।" ३

कवि कौफित पांदुकतावस पूछता है —

"कौफित का तुम गा रहे, बाहर रबीन्द्र राग के।" ४

कवि की मनपि यह राग बचकर नहीं बांटा फिर भी उस "भोजना बसातः क्षणि

को दुनकर मन शीतल, शांत तथा विनायक ही उठता है तथा वह कौफित को

बौर बर्रिक गाने के लिये उत्साहित करता है —

"गाया नव उत्साह से हरकी न पहर के लिये कौफित। महत्त्व पवन में मरने को स्वर के लिये।" ५

कहिं वै शीतल निर्भर प्रभात में सूब-पूंज वर्षावा हुआ कौफित कलन कर रहाँ है तो

---

१. कामायनी, पृष्ठ ११६।
२. वन-कुंज, पृष्ठ १७०।
३. कानन कुङ्खु, पृष्ठ ६६।
४. कानन कुङ्खु, पृष्ठ ५६।
५. कानन कुङ्खु, पृष्ठ ४६।
६. कानन कुङ्खु, पृष्ठ ४६।
७. विशाल, पृष्ठ २२।
कहीं-कहीं 'कोकिल' की बांस वृक्ष प्यार भी स्यामक बम्बर में उद्भव हुआ तो बिना ध्वनिक ही बिढ़ी पहुँची है निष्ठुर कमर दरबार से बांस लाया हुआ है। वाक्यांश, वायु और समय कृत्तिके कोई थे उद्भव हुआ तो विषय शास्त्र निश्चित नहीं है, जीवन की बातिष्ट भी वायु है वह अनूठा प्रेमणा जो कवि को ही नहीं सारी चेतन प्रकृति को प्रभावित करती है।

स्याम-पृथवी के कारण कुछ नै उसे स्यामा नाम दिया है —

"स्यामा ध्वनि वसु स्वीकरणी"

कोकिल के संगीत की कवि वे उत्साह का प्रतीक माना है —

"निरंजन वाहू वह था किवना उल्लास, काकी के स्वयं में जानन्द प्रतिवासन गूङ रही, जीवन ध्वनि के जन्म भी।" ³

कोकिल के अधिरात्र बन्ध पतियों का वर्णन बहुत ही कम निकला है। मुख्य काव्य में इस प्रकार के पतियों के जी उद्योगण उपक्रम विषय होते हैं उन्हें नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

चांदक —

"चांदक की चित्रित पुकार" ⁴

चांदक चित्रित दोहर पुकार ही नहीं रहा है वर्तमान स्तोत्र में नील पीरद की मी देखा है —

"नील नीरद देखकर वाक्यांश में
कां बढ़ा चांदक रहा फिर वास में?" ⁵

---

9. लहर ४५।
10. बांसु ४६।
11. कृष्ण ४७।
12. बांसु ६३।
13. कांतांकुम ६४।
कोक —

कौन प्रकार कोक भी उल्लिखित हो उठते हैं, उसका चित्र भी वृत्तत्व है —

"काँ कोकों की हुआ उठालो है
का कलाबिधि का बफ्ते विकास है"।

कोक —

कोक-युगल का निर्गर खण्ड विविध है। पुराण-काव्य में उसकी फलक पर विषयान है —

"उठ रही थी काँचिमा खुशर निर्मिति है दीन
उनका संवि कलुण बलीथ बालीक रामक्रीषन
वह दरिङ्दो भिंतन रहा रच सक करुणा-भोक,
सोक पर निर्जन विलय है विलुहते थे कोक।"

लंस —

लंस का बोलना भी कवि को आकृष्ट करता है। उसके बोलने के कारण का उल्लेख करते हुए प्रसाद ने कहा है —

"बोल उठा जो लंस रेड़कर कमल-कवि को।"

पशीहा —

झुठ पर बोलें पशीहा की "मी कहा?" की च्वति कवि को ऐसी प्रतीत होती है मानो वह अणकुल है। उसके समान वर्णन "प्राणामक की हुआ रहा है कि तुम कहा कहीं भी हो बा। मिलो।" फिर-भिंतन की हथ बूढ़ी ज्जास को देखकर

1. कानन-कुम, पृष्ठ ५०।
2. कामायनी, पृष्ठ ६२।
3. कानन-कुम, पृष्ठ ६६।
4. फलना, पृष्ठ ४५।
कपि कह उठाया है —

"प्यार कौं सी तुम्हारी? ममोला! वों न होकर बाहर जा रही कहा?

तो, वही कह रहा —

पी! कहां? पी! कहां?

पपीरे की निरंतर कावर टर धुकर कपि को गुम हो जाता है कि मूल वह या बनाने में ही तो वह यथार्थ नहीं निकल रही —

"मुक्त व्योम में उड़ी सुड़ेर हाथ है,
कावर बच पपीरे को वह यथार्थ कभी !
निक्ल-निकल कर मूल या कि बनाने में
लगती है, कौन सी किसी कि पुम खे।"  ३

पुष्प-बग्ल के चित्र

प्रस्ताव काव्य में परिहार की बैठला पुस्तक के चित्रण कम हो लुढ़ा है। कामायणी चूकि अस्त जीवन का महकाव्य है बत; उसमें जीवन के क्रमिक विकास की चंचल होने के कारण लुढ़ेर स्थान पर पुस्तक का उलेख भी लुढ़ा है। निम्न परिहार के रुख का उलेख है —

"सस्य, पुष्प या धान्य का होने लगा तंगार।"  ३

"कामायणी" महकाव्य की प्रसूत नायिका शुद्ध के छोटे है होने का बुड़ा बुड़ा वर्णन मिलता है। इस वर्णन का एक ऐसा मनोहारी चित्र उपर्युक्त है जो


1. कर्णा , पुष्ट ५६.
2. कर्णा , पुष्ट २०.
3. कामायणी , पुष्ट ६२.
प्रसाद की चित्रात्मकता के कौशल को प्रस्तुत करने में सहाय है। प्रसाद के सबूतों में ही देखिये —

"एक भाषा। जा रहा था पृथु विविधि के लाभ, ही रहा था। मोह करूणा है खोज सनाथ।
चफु-कोमझ कर रहा फिर जत पृथु के बंग, सौहै का खाता चमर उद्झाव हो वह था।"

कभी फूलिट रोम-राजी के बरीर उहाळ;
पांवरी के निज बनता विविधि-वस्त्रविहार।
कभी नीच-मोई नयन के विविधि बदन निहार,
कल पंचरित सौहै देवा दुःख-पुष्प वे ढाई।"

कामायनी में इस लक्ष्य की भी महत्व मिलती है कि उस समय भी सामान्य मौजन का पशुकन था जिसके दिने पशुओं की बनी चढ़ाई जाती थी। जल विपलव वे वर्षे हुए किलात तथा वाकृति नामक अरुंि पुरोहित की वामिश्च लौहू रखता, मनु का पृथु देश देखकर व्याकुल, बंका रहती है उसका चिन्ता दुःखव्य है —

"कभी किलात। लागे हावे कुण वृण
बैंक कहा तक जीव, कब तक भे देश जीवित पृथु घुंट लौह का पीों?
का कोई इसका उपाय ही नहीं कि इसको लाऊँ?

महाकवि प्रसाद ने एक ऐसा चित्र भी लीटा है जो दार्शन होने के साध-साध कीमत्व भी है। पृथु देश संबद्ध होने के कारण उसका उल्लेख कहा किया वा रहा

1. कामायनी, पृष्ठ ६३।
2. कामायनी, पृष्ठ १२२।
है। "कामाहरी" के "कभी सर्द के त्य/की समाप्ति का दृश्य देखिए --

"त्य/क समाप्त हो कुंज का तो भी
छाया रही थी ज्वाला;
दांरण दृश्य! रद्दिर के बैठे।
बस्सा-खंड की माता।
शैशी की निमंद प्रकाशना,
पर्व की तात्त्व वाणी;
भिड़ कर बातार रथ बना था
कोई कुल्त्त प्रणारी।" १

हृदया तथा मात्र के नेतृत्व में जाते हुए यात्री दल के साथ ही "घर्म प्रति-
निधि वृषाम" का भी उल्लेख किया गया है --

"त्य/धा सोमनातन के बारेंट
वृष्णि खल घर्म का प्रतिविपरीत;
घर्म/मा/पर दवारा थानों में
उसकी थी मंडल संग्रह-विचि।" २

हज़ार दी नहीं --

"तब वृषाम गोपाल की
अपनी घर्मा ध्वनि करता;
घर्मा का हृदया के पोहे
मात्र भी था हाँ भरता।" ३

-------------------------------
1. कामाहरी, पृष्ठ २२६।
2. कामाहरी, पृष्ठ २८५।
3. कामाहरी, पृष्ठ २२५।
4. कामाहरी, पृष्ठ २८५।
बन्य पिस्झा मं मृणां का वर्णन-एकां ख़ल पर ही मिलता है --
1. मृण मुखर जुगाई करते हैं।

भूग के साथ मृण-शाकक का वर्णन भी देखिये --
2. मृण शाकक के साथ मृण भी देख, रही थी।
शाक विवृक्कन जानक खुता के सींह रही थी।

कामायनी में मृणा का वर्णन भी किया गया है। मृण, वह भी मानवीय अंगभूति के ही समान है। मृण जीव मृणा में ही रहते हैं। उन्हें बच रहे कोई काम शांति नहीं रह गया था। एक दिन का वर्णन देखिये --

तोहटे थे मृणा भे धक कर
ढलाई पड़ता गुफा बार।
पर बीर न बाणी बढ़ने की
इंक्षा होती, करते विचार।

मृण डाल किया, फिर बुझू को भी
मनु खड़ गये शिखित बीर,
दिहाई थे सब उक्कासन बढ़ते।
बाधी, प्रति, गुंग, तीर।

इस चित्र में केवल मृण ही नहीं मृणा के सभी उक्कासन, तीर, गुंग बादत
बुझ साथ उम्बर कर दूर्विष्ट के सम्पूर्ण उपस्थित ही जाते हैं।

'कामायनी' में एक स्थान पर कल के प्रापियों का भी उल्लेख मिलता है--
-----------------------------
1. लहर, पृष्ठ 33.
2. कानन-कुसुम, पृष्ठ 66.
3. कामायनी, पृष्ठ 152.
कानिधि के का-बारी कहने
विकल्प निकलते उतरते ह।

इन पत्रों तथा पुस्तकों के अतीत रूप से जीव बनने बराबर भरी गाते मुकुर कुंदे की पुस्तक ने खचित्क चरी की है। प्रथा शेषा प्राप्त है जो लंबा है बी काव्य का उपक्रम बनाता रहा है। कुर्सण मीरा काव्य में वो इतर किरिश्चं ही उल्लेख है। मीरों की उत्साह तथा मस्ती का प्रतीक मानते हुए उसी रूप में पुस्तक ने उसका चित्रण किया है —

"उत्तम कमल कानन में होती ही मुखपी की नौकरी को।"

मीरों की गुंज में रघु, मदिरा, मौद, पराग सभी कुंब मिला जूठा है —
"रघु रघु धर मुख परी, मदिरा-मौद पराग-वर्मे।"

बारा बाषा उनकी गुंज के घर उठा है —
"सत-श्रृं मुखपी का गुंजन
पर उठा भाषा नम।"

"मुख पीकर लोक रघु का उर न पास कुलाबो।"

1. कामयानी, पृष्ठ २६।
2. बजाकिष्ण, पृष्ठ १६।
3. कामयानी, पृष्ठ १५३।
4. कामयानी, पृष्ठ १६४।
5. कामयानी, पृष्ठ २६६।
6. विषाण, पृष्ठ २३।
7. कर्ना, पृष्ठ ६०।
कुमुद की कहाँ पर बालिगण धूमती । रहते हैं तथा कमलावती की देखकर 
प्रेरणावृक्ष में होकर सुंदरी रहती है। ये किन्तु मनुष्य कर समान के सुरक्षा 
वान पर यहीं मनुष्य उसे छिड़ कर किसी अन्य कहीं की लोहा में कह पड़ता है।

"मनुष्य कब एक कही का है। 
पाया जिसमें ओर-रह, धूरा धूरा धूरा, 
बेलु छो उस कही है, भिखरा पर बुरुरा, 
बिहारी बुन-बुनी का है!" 

यह मनुष्य उद्दीपन रूप में पी चिन्तित हुआ है --

"चिर निराशा तीर्थ के, 
प्रतिच्छायित भ्रु-हर में; 
मनुष्य धार बर-बर बूढिकर 
भ्रष्ट कर जलनाल रे मन।" 

पत्ती युगल का अपने नींदों में सिंगल का धूमने का चेला भी वातावरण 
चित्र प्रसाद ने बोलचा है। वहा मनुष्य कहीं है --

"ढल गया दिख फीसा फीसा 
लुम रकानुरुष बन रहे धूम, 
देही नींदों में विहार युगल 
अपने सिंगल को रहे धूम।"

---------------------------
1. कामन कुमुद, पृष्ठ ६३।
2. कामन कुमुद, पृष्ठ ५०।
3. विशाल, पृष्ठ ६२।
4. वन-गुप्त, पृष्ठ २०५।
5. कामायनी, पृष्ठ २२५।
6. कामायनी, पृष्ठ १५५।
किरणों का वर्णन करते समय उपमान रूप में भी कवि ने विष्णु का वर्णन किया है। उसका चित्र भी देखिए --

"नील गाढ़े में उड़ती उड़ती विष्णु-बालिका थी किरणे
स्नानीक कि की, श्लीक की, नीलां घंटे बर ज़ा गिरने।"

सम्पूर्ण: कहा जा सकता है कि प्रसाद-काव्य में इस प्रकार के मानवशिल्प ज्ञान भूमिका के चित्र वैशालीज्ञ कृति है, फिर भी इन चित्रों में एक प्रकार की खोजाता है जो कवि की महान परिस्थितियों है। प्रसाद इस दृष्टि से भी फ़हान चित्रकार है।

---

1. कमायनी, पृष्ठ १८७.